Hindi Vidya Prachar Samiti's

Ramniranjan Jhunjhunwala College

of Arts, Science & Commerce

(Autonomous College)

Affiliated to

UNIVERSITY OF MUMBAI

Syllabus Framework as per LOCF

Program: M.A. HINDI
Program Code: RJAPGHIN

विषय अनुक्रमणिका

अ.क्र.	विषय	पृष्ठ क्रमांक
१.	प्रस्तावना (Preamble)	३ - ५
२.	कला स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम का परिणाम (PO)	६ - ८
३.	हिंदी भाषा और साहित्य स्नातकोत्तर : अनिवार्य योग्यता/पाठ्यक्रम का परिणाम (PSO)	९ - १०
४.	हिंदी भाषा और साहित्य स्नातकोत्तर : अनिवार्य योग्यता/पाठ्यक्रम परिणाम की सारणी (Table of Mapping of CO to PSO)	११ - १२
५.	अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching learning Process)	१३
६.	मूल्यांकन पद्धति (Assessment methods)	१४ - २१

प्रस्तावना

हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य क्यों पढ़ना चाहिए?

भाषा केवल अभिव्यक्ति एवं संपर्क का माध्यम ही नहीं है बल्कि वह सामाजिक सोच, सामासिक संस्कृति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत जैसे एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश की राजभाषा एवं संपर्क भाषा होने के साथ-साथ हिन्दी विभिन्न भाषा-भाषी समाजों और संस्कृतियों के बीच अंतःसंवाद तथा पारस्परिक संबंध का माध्यम भी है। हिंदी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है, वर्तमान में हिंदी जानने वालों की संख्या करीब बारह सौ मिलियन है, यह संख्या विश्व की कुल आबादी का अठारह प्रतिशत है अर्थात विश्व का हर छठा व्यक्ति हिंदी जानता है। हिंदी भाषा की बढ़ती लोकप्रियता और प्रयोक्ताओं के कारण बाजार ने इस भाषा को अपना लिया है परिणामस्वरूप विगत दशकों में रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए विकसित हुए, नये अवसरों को ध्यान में रखकर हिन्दी विभाग ने अपने बी.ए. तथा एम.ए. पाठ्यक्रम का निर्माण किया है। उक्त दोनों पाठ्यक्रम अपने स्वरूप एवं प्रकृति में अन्तर-अनुशासनात्मक (इंटरडिसिप्लिनरी) हैं। इन पाठ्यक्रमों में साहित्य और विभिन्न साहित्यिक विमर्शों जैसे स्त्री, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक तथा हाशिये के समाज पर केंद्रित साहित्य की विविध विधाओं, आधुनिक साहित्य सिद्धांतों, तुलनात्मक साहित्य, लोक साहित्य, संस्कृति, सिनेमा, प्रयोजनमूलक हिन्दी, अनुवाद, मीडिया एवं सोशल मीडिया अध्ययन आदि विषयों पर विशेष जोर दिया गया है तथा इन विषयों के माध्यम से विद्यार्थियों में बुनियादी भाषिक-व्याकरणिक कौशल, लेखन कौशल, पठन-पाठन कौशल, वक्तृत्व कौशल, समूह कार्य कौशल, अनुवाद कौशल, अत्याधुनिक तकनीकी कौशल, हिंदी में तकनिकी प्रयोग इत्यादि का विकास किया जाता है।

रामनिरंजन झुनझुनवाला महाविद्यालय से हिंदी क्यों पढ़ना चाहिए?

आर. जे. महाविद्यालय का हिंदी विभाग उतना ही पुराना विभाग है जितना की महाविद्यालय। यह सन् 1963 में महाविद्यालय के स्थापना वर्ष में शुरू हुआ और तब से इस विषय के लिए शैक्षणिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में बना हुआ है। छह दशकों से अधिक समय में आज विभाग मुंबई के विभिन्न महाविद्यालयों में सबसे प्रतिष्ठित और सफल विभाग के रूप में अपनी पहचान बना चुका है। शैक्षणिक कार्यक्रमों की बात की जाये तो विभाग हिंदी विषय में स्नातक, स्नातकोत्तर के साथ-साथ पीएच.डी. कार्यक्रम की भी पेशकश करता है जोकि मुंबई विश्वविद्यालय से संबद्ध

और मान्यता प्राप्त है। हिंदी में स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम में पेश किए जाने वाले अन्य सभी पाठ्यक्रमों की तरह, हिंदी का विषय भी पीएच.डी. तथा अन्य डिप्लोमा कोर्सेस के लिए छात्रों को अनिवार्य योग्यता और गतिशीलता प्रदान करता है। एम.ए. हिंदी के छात्र भाषिक-व्याकरणिक कौशल, कार्यालयीन हिंदी हेतु अपेक्षित कौशल, पठन कौशल, वक्तृत्व कौशल, समूह कार्य कौशल के साथ साथ एक बेहतर मानवीय गुणों को आत्मसात करते हैं जो उन्हें रोजगार के अवसरों के साथ-साथ एक बेहतर सामाजिक प्राणी बनाता है। हिंदी विभाग भाषा एवं साहित्य से संबंधित अधुनातन विषयों पर व्याख्यान, अतिथि व्याख्यानमालाओं, राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय परिसंवादों/ संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं, फील्ड ट्रिप, प्रोजेक्ट्स, व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र, औद्योगिक दौरे, महाविद्यालयीन-अंतरमहाविद्यालायीन प्रतियोगिताओं का नियमित आयोजन करता रहता है। अकादमिक महत्व के राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय आयोजनों में विद्यार्थियों को अपने शोध पत्र प्रस्तुत करने तथा बेहतरीन शोध आलेखों को लिखने और प्रकाशित कराने के लिए सतत मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन दिया जाता है। इसके अतिरिक्त हिंदी विषय से जुड़े राज्य/राष्ट्र स्तरीय सरकारी और गैर सरकारी नौकरियों को प्राप्त करने हेतु मार्गदर्शन दिया जाता है। स्वायत्ता के तहत, विभाग ने कौशल आधारित शिक्षा और मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम को शामिल करके पाठ्यक्रम को और अधिक मजबूत बनाया है जो छात्रों को विषय का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करता है। हिंदी विभाग उन कुछ विभागों में से एक है जो एक वर्ष में एक से अधिक मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम चलाता है और इन पाठ्यक्रमों के लिए नामांकन करने वाले महाविद्यालय के अन्य विषयों के छात्रों को आकर्षित करने में सक्षम है।

हमारा पाठ्यक्रम, आपका सामर्थ्य

स्नातकोत्तर के कुल चार सेमेस्टर के लिए हिंदी के पाठ्यक्रम को सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है ताकि विद्यार्थियों को हिंदी की भाषिक बारीकियों और साहित्यिक समझ को विकसित करके वर्तमान इंडस्ट्री के मांगों के अनुरूप बनाया जा सके। प्रथम सेमेस्टर से चौथे सेमेस्टर तक पाठ्यक्रम का उत्तरोत्तर गुणात्मक विकास किया गया है। प्रथम वर्ष एम.ए. में हिंदी साहित्य के इतिहास, भाषा विज्ञान, काव्यशास्त्र तथा मध्यकालीन पदों के माध्यम से विद्यार्थियों में हिंदी भाषा और साहित्य की गहराइयों और बारीकियों से अवगत कराते हुए उनमें साहित्यिक समझ का कौशल विकसित किया जाता है। द्वितीय वर्ष एम.ए. में हिंदी साहित्य और भारतीय साहित्य के विभिन्न साहित्यिक विधाओं के पाठ के माध्यम से साहित्यिक विमर्शों, वादों और अस्मितामूलक साहित्य के सामाजिक सरोकार, महत्व और दायित्व का अध्ययन किया जाता है। जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त होने वाली हिंदी तथा जनसंचार के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्ष की बुनियादी समझ का विकास

किया जाता है। इसके अतिरिक्त आज के समय में बढ़ती शोध के मांगों के मद्देनजर स्नातकोत्तर के चौथे सेमेस्टर में एक पूरा प्रश्नपत्र शोध पर रखा गया है जिससे विद्यार्थियों में शोधात्मक विवेक का विकास किया जा सके। ये सभी विषय हिंदी भाषा में पीएच.डी, जनसंचार, अनुवाद, सिनेमा आदि कोर्स के लिए आधारभूमि तैयार करते हैं। वर्तमान समय में इंडस्ट्री के मांगों के अनुरूप हम व्यावहारिक ज्ञान के महत्व को समझते हैं इसलिए हमने अपने के विद्यार्थियों के लिए हर वर्ष नियमित रूप से फील्ड ट्रिप और औद्योगिक दौरे करते रहते हैं जिससे विद्यार्थियों के व्याहारिक ज्ञान में बढ़ोत्तरी होती है, साथ ही हमने जी न्यूज़, एक्सिम बैंक तथा कुछ अन्य प्रतिष्ठित गैर सरकारी निजी कंपनियों और विद्यालयों से अपने संबंध विकसित करने में सफल रहे हैं जिससे विविध कार्यक्रमों में उनका सहयोग लिया जा सके और विद्यार्थियों को उनके यहाँ इंटर्नशिप हेतु भेजा जा सके। हमारे सफल और होनहार पूर्व छात्र हमारे साथ जुड़े हुए हैं जो हमारे हर नए बैच के विद्यार्थियों के साथ संपर्क में रहते हैं और उनकी पढ़ाई, इंटर्नशिप और रोजगार संबंधी पहलुओं पर निरंतर मार्गदर्शन करते रहते हैं।

कला स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम का परिणाम (PO)

1. **साहित्यिक - सांस्कृतिक ज्ञान क्षमता**
2. **विषय का ज्ञान**
   - साहित्य के विभिन्न रूपों, विधाओं, कालखंड और आंदोलनों की पहचान करना, उनके बारे में चर्चा करना तथा आलेख लिखने की योग्यता।
   - विभिन्न साहित्यिक और समीक्षात्मक अवधारणाओं को समझने की योग्यता।
   - पाठ को गंभीरतापूर्वक पढ़ने की योग्यता।
   - विभिन्न विधाओं के तथ्य, ऐतिहासिक संदर्भ को जानने की योग्यता।
   - भाषा वैज्ञानिक और शैलीगत विविधताओं को समझने की योग्यता।
   - विभिन्न प्रायोगिक संरचनाओं की सहायता से पाठ विश्लेषण और पाठालोचन की योग्यता।
   - सामाजिक, धार्मिक, क्षेत्रीय, लैंगिक, राजनीतिक और आर्थिक संदर्भों में साहित्य को जानने की योग्यता।
   - विभिन्न संदर्भों में प्रश्नाकुलता की योग्यता।
   - साहित्य को पढ़ने के उपरांत समीक्षात्मक दृष्टि से स्थानीय और वैश्विक संदर्भों को जानने की उत्सुकता का विकास।
   - भारतीय मानकों और संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में साहित्य को जानने, समझने और विश्लेषण करने की योग्यता।
3. **संप्रेषण कौशल**
   - साहित्यिक, अकादमिक और बोलचाल की हिंदी को बोलने और लिखने के कौशल का विकास।
   - पढ़ने और सुनने के कौशल का विकास।
   - स्पष्ट रूप से समीक्षात्मक अवधारणाओं का प्रयोग करने की योग्यता।
   - अभिव्यक्ति के विभिन्न कौशलों का विकास।
4. **आलोचनात्मक दृष्टिकोण**
   - पढ़ने के पश्चात आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास।
   - तुलनात्मक दृष्टि से अन्य भाषाओं के साहित्य के पुनरावलोकन का विकास।

- ऐतिहासिक संदर्भों में पाठ निर्धारण करने की योग्यता।
- साहित्य को विभिन्न कालखंडों में बांटने की योग्यता तथा संक्रमण काल के मध्य की स्थितियों को समझने की योग्यता।

5. समस्याओं का समाधान

- विश्लेषण कौशल के माध्यम से दूसरों को साहित्य से परिचित कराने की योग्यता।
- दूसरी भाषाओं के साहित्य की अन्तर्वाही धारा को पकड़ पाने की योग्यता।
- अनुवाद के माध्यम से पारस्परिक संबंधों की खोज करने की योग्यता।

6. विश्लेषणात्मक और तार्किक दृष्टि का विकास

- श्रेष्ठ साहित्य की विशेषता और कमजोरियों का विश्लेषण करने की योग्यता।
- तार्किक रूप से साहित्य के अनुशीलन की योग्यता।
- समीक्षा के नए बिंदुओं के अन्वेषण की योग्यता।

7. अनुसंधान कौशल

- समस्याओं को खोजने की योग्यता।
- शोध परिकल्पना और प्रश्नांकन की योग्यता ताकि जिज्ञासाओं का विभिन्न उत्तरों के माध्यम से शमन किया जा सके।
- शोध-पत्र हेतु योजना बनाना और शोध-पत्र लिखने की योग्यता।

8. समूह कार्य और समय प्रबंधन

- कक्षा में होने वाली समूह चर्चा में सकारात्मक रूप से प्रतिभाग करने की योग्यता।
- समूह कार्य में योगदान करने की रुचि।
- दिए गए समय में कार्य पूर्ण करने की योग्यता।
- समूह निर्माण की योग्यता।
- योग्यतानुसार समूह कार्य आवंटन का कौशल।

9. वैचारिक स्पष्टता

- अध्ययन के उपरांत साहित्य के संबंध में वैचारिक दृष्टि का विकास।
- दूसरे विचारों का साहित्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।
- स्थानीय से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक की वैचारिकी से परिचय।

10. स्वाध्याय के प्रति विशेष रूचि का विकास

- साहित्यिक और समीक्षात्मक कृतियां पढ़ते समय स्वाध्याय की भावना का विकास।
- व्यक्तिगत शोध के साथ-साथ प्रश्न निर्माण और उत्तर देने की योग्यता का विकास।

- दूसरों को स्वाध्याय हेतु प्रेरित करने की योग्यता का विकास।

11. डिजिटल साक्षरता

- सूचना एवं तकनीकी कौशल से परिचय।
- तकनीकी उपकरणों का विधिवत उपयोग करने की योग्यता का विकास।

12. बहुसांस्कृतिकता

- विभिन्न भाषाओं (भारतीय एवं विदेशी) के साहित्य के अध्ययन के द्वारा सांस्कृतिक बहुलता को जानने के प्रति रुचि।
- विभिन्न विविधताओं को स्वीकार करने की क्षमता का विकास।
- बहुसांस्कृतिकता को आत्मसात करने की योग्यता।

13. नैतिक और सामाजिक मूल्य

- सामाजिक मूल्यों को स्पष्ट रूप से समझने के कौशल का विकास।
- नैतिक मूल्य के प्रति जागरूकता और उनके प्रचार-प्रसार के लिए रुचि उत्पन्न होने की संभावना का विकास।
- साहित्य के माध्यम से विभिन्न सामाजिक समस्याओं/संदर्भों जैसे - पर्यावरण, धर्म, राजनीति, समाज आदि को जानने-समझने की जिज्ञासा का विकास।

14. जीवनपर्यंत प्रशिक्षण

- साहित्य के अध्ययन के माध्यम से स्थायित्वबोध का विकास।
- व्यक्तिगत और समष्टिगत दृष्टिकोण का समायोजन करते हुए नए मूल्यों की स्थापना।
- ऐसी साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन जो चिरकालिक और स्थानीय से लेकर वैश्विक महत्व की हैं।

15. संवाद और भाषिक कौशल

16. रसास्वादन क्षमता

हिंदी भाषा और साहित्य स्नातकोत्तर : अनिवार्य योग्यता/पाठ्यक्रम का परिणाम (PSO)

१. साहित्य के पठन-पाठन की अभिरुचि का विकास करना.
२. साहित्य के विभिन्न रूपों, विधाओं, कालखंड और आंदोलनों की पहचान करना, उनके बारे में चर्चा करना तथा आलेख लिखने की योग्यता।
३. विभिन्न साहित्यिक और समीक्षात्मक अवधारणाओं को समझने की योग्यता।
४. विभिन्न विधाओं के तथ्य, ऐतिहासिक संदर्भ को जानने की योग्यता का विकास करना।
५. भाषा वैज्ञानिक और शैलीगत विविधताओं को समझने की योग्यता का विकास करना।
६. सामाजिक, धार्मिक, क्षेत्रीय, लैंगिक, राजनीतिक और आर्थिक संदर्भों में साहित्य को जानने की योग्यता का विकास करना।
७. साहित्य को पढ़ने के उपरांत समीक्षात्मक दृष्टि से स्थानीय और वैश्विक संदर्भों को जानने की उत्सुकता का विकास करना।
८. भारतीय मानकों और संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में साहित्य को जानने, समझने और विश्लेषण करने की योग्यता का विकास करना ।
९. साहित्य का विश्लेषण करने की क्षमता का विकास करना.
१०. साहित्यिक, अकादमिक और बोलचाल की हिंदी को बोलने और लिखने के कौशल का विकास।
११. तुलनात्मक दृष्टि से अन्य भाषाओं के साहित्य के पुनरावलोकन का विकास।
१२. साहित्य को विभिन्न कालखंडों में बांटने की योग्यता तथा संक्रमण काल के मध्य की स्थितियों को समझने की योग्यता।
१३. श्रेष्ठ साहित्य की विशेषता और कमजोरियों का विश्लेषण करने की योग्यता।
१४. साहित्यिक और समीक्षात्मक कृतियां पढ़ते समय स्वाध्याय की भावना का विकास।
१५. विभिन्न भाषाओं (भारतीय एवं विदेशी) के साहित्य के अध्ययन के द्वारा सांस्कृतिक बहुलता को जानने के प्रति रुचि।
१६. साहित्य के माध्यम से विभिन्न सामाजिक समस्याओं/संदर्भों जैसे - पर्यावरण, धर्म, राजनीति, समाज आदि को जानने-समझने की जिज्ञासा का विकास।
१७. साहित्य के अध्ययन के माध्यम से स्थायित्वबोध का विकास।

१८. सामाजिक मूल्यों को स्पष्ट रूप से समझने के कौशल का विकास।

१९. नैतिक मूल्य के प्रति जागरूकता और उनके प्रचार-प्रसार के लिए रुचि उत्पन्न होने की संभावना का विकास।

२०. बुनियादी भाषा कौशल, अनुवाद, प्रकाशन, सांस्कृतिक पत्रकारिता, संचालन, कंप्यूटर टंकण, मीडिया लेखन, संवाद लेखन, सिनेमा इत्यादि हिंदी भाषा और साहित्य से संबंधित रोजगार में सक्षम होना.

हिंदी भाषा और साहित्य स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम में मुख्य पाठ्यक्रम परिणाम की सारणी

	MA - I SEM I				**MA - I SEM II**				**MA - II SEM III**					**MA - II SEM IV**		
पाठ्यक्रम का परिणाम	**RJAPGHIN101**	**RJAPGHIN102**	**RJAPGHIN103**	**RJAPGHIN104**	**RJAPGHIN201**	**RJAPGHIN202**	**RJAPGHIN203**	**RJAPGHIN204**	**RJAPGHIN301**	**RJAPGHIN302**	**RJAPGHIN303**	**RJAPGHIN304**	**RJAPGHIN305**	**RJAPGHIN401**	**RJAPGHIN402**	**RJAPGHIN403**
१) साहित्यिक-सांस्कृतिक ज्ञान क्षमता	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
२) विषय ज्ञान	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
३) सम्प्रेषण कौशल	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
४) आलोचनात्मक दृष्टिकोण	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
५) समस्याओं का समाधान	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
६) **विश्लेषणात्मक और तार्किक दृष्टि का विकास**	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
७) अनुसन्धान कौशल	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√

८) समूह कार्य और समय प्रबंधन	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
९) वैचारिक स्पष्टता	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
१०) स्वाध्याय के प्रति विशेष रूचि का विकास	√	√	√	√	√		√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
११) डिजिटल साक्षरता	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×
१२)बहुसांस्कृतिकता	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
१३) नैतिक और सामाजिक मूल्य	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
१४) जीवनपर्यंत प्रशिक्षण	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
१५) संवाद और भाषिक कौशल	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
१६) रसास्वादन क्षमता	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√

Syllabus Framework as per LOCF

अध्ययन अध्यापन पद्धति (Teaching learning Methods)

शिक्षण विधियों को छात्र और उनके अध्ययन की प्रक्रिया के केंद्र में रखकर चयनित किया जाता है। शिक्षण का मुख्य उद्देश्य यह है कि छात्रों को बुनियादी भाषा कौशल के साथ-साथ हिंदी भाषा से संबंधित रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में भाषिक ज्ञान को आत्मसात और प्रयोग करने का हुनर हासिल करना चाहिए। सीखने की प्रक्रिया को मनोरंजक बनाने के लिए पाठ्यक्रम में सौंपे गए साहित्यिक कार्यों के पठन और व्याख्या में छात्रों की अधिकतम भागीदारी के उद्देश्य से निम्नलिखित विभिन्न शिक्षण पद्धतियों को अपनाया जाता है।

1- व्याख्यान - पाठ्यक्रम का सैद्धांतिक, वर्णनात्मक, शास्त्रीय भाग के लिए व्याख्यान पद्धति।
2- समूह चर्चा -विद्यार्थियों को दिए गए विभिन्न साहित्यिक-गैर साहित्यिक कार्यों पर विश्लेष्णात्मक, आलोचनात्मक चर्चा।
3- सस्वर पाठन - प्राध्यापक द्वारा कहानियों, उपन्यासों, कविताओं, नाटकों आदि का पाठ।
4- प्रस्तुति - छात्रों द्वारा प्रस्तुति।
5- प्रकल्प / कार्यक्रम - प्रकल्प और कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी के भाषिक कौशल का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता है ।
6- फील्ड ट्रिप - कक्षा में सिखाई गई साहित्यिक - भाषिक ज्ञान धाराओं का व्यावहारिक जीवन में उनके प्रयोग तथा प्रत्यक्ष रूप से देखने-सीखने का अवसर।
7- अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग - फिल्में, लघु फिल्में, वृत्तचित्र, यूट्यूब और सोशल मीडिया पर ऑडियो और वीडियो क्लिप, ऑडियो- वीडियो-क्लिप, पीपीटी आदि का प्रयोग.
8- गूगल क्लासरूम जैसे लर्निंग मैनेजमेंट प्लेटफॉर्म, व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया - सूचनाओं, अध्ययन सामग्री तथा प्रकल्प के आदान-प्रदान के लिए इन प्लेटफॉर्म का प्रयोग किया जाता है।

मूल्यांकन पद्धती (Assessment methods)

1. २० - २० अंकों के दो आतंरिक मूल्यांकन परीक्षा लिए जायेंगे, प्रत्येक परीक्षा की अवधि ३० मिनट की होगी.
2. सत्रांत परीक्षा ६० अंकों की होगी, जिसकी अवधि 2 घंटे की होगी,
3. सत्रांत परीक्षा उत्तीर्ण करने की लिए न्यूनतम ४०% अंकों लाने अनिवार्य हैं.
४. विद्यार्थी को सत्रांत परीक्षा के योग्य होने के लिए दो आतंरिक मूल्यांकनों में से किसी में में उपस्थित होना अनिवार्य है.
5. किसी भी KT परीक्षा के लिए ODD-ODD / EVEN-EVEN पैटर्न का पालन किया जायेगा.
6. प्राचार्य के परामर्श से विभागाध्यक्ष का निर्णय अंतिम और सर्वमान्य होगा.

Syllabus Framework as per LOCF

Evaluation and Assessment

प्रश्न पत्र का प्रारूप

प्रथम वर्ष एम.ए.

सेमेस्टर - I & II

1. External Examination (Semester and Examination) Total Marks – 60
2. Internal Examination (आतंरिक परीक्षण) Total Marks – 40

   कक्ष परीक्षा / पुस्तक समीक्षा / प्रकल्प - २० अंक

   प्रस्तुतीकरण / रचनात्मक कार्य - १० अंक

   कक्ष शिक्षण के दौरान सहभागिता- ०५ अंक

   शिष्टाचार एवं समग्र आचरण - ०५ अंक

एम.ए. प्रथम वर्ष - सेमेस्टर I और II के लिए

प्रश्नपत्र क्रमांक :- १, २ और ३ के लिए

प्रश्न क्र. १	पूछे गए दो दीर्घोत्तरी प्रश्नों में से एक का उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
प्रश्न क्र. २	पूछे गए दो दीर्घोत्तरी प्रश्नों में से एक का उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
प्रश्न क्र. ३	पूछे गए दो दीर्घोत्तरी प्रश्नों में से एक का उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
प्रश्न क्र. ४	पूछे गए चार टिप्पणियों में से दो के उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
		६० अंक

पेपर क्र .४

प्रश्न क्र. १	पूछे गए तीन सन्दर्भ-सहित व्याख्या में से दो के उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
प्रश्न क्र. २	पूछे गए दो दीर्घोत्तरी प्रश्नों में से एक का उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
प्रश्न क्र. ३	पूछे गए दो दीर्घोत्तरी प्रश्नों में से एक का उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
प्रश्न क्र. ४	पूछे गए पाँच टिप्पणियों में से तीन के उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
		६० अंक

द्वितीय वर्ष एम.ए.
सेमेस्टर - III & IV

1. External Examination (Semester and Examination) Total Marks – 60

2. Internal Examination (आतंरिक परीक्षण) Total Marks – 40

कक्ष परीक्षा / पुस्तक समीक्षा / प्रकल्प	- २० अंक
प्रस्तुतीकरण / रचनात्मक कार्य	- १० अंक
कक्ष शिक्षण के दौरान सहभागिता	- ०५ अंक
शिष्टाचार एवं समग्र आचरण	- ०५ अंक
सेमेस्टर IV के प्रश्नपत्र III के लिए	- ६० अंक (प्रकल्प)
	- ४० अंक (मौखिकी)

एम.ए. द्वितीय वर्ष - सेमेस्टर III और IV

सेमेस्टर III के प्रश्नपत्र क्रमांक :- १, २, ३ और ५ के लिए
सेमेस्टर IV के प्रश्नपत्र क्रमांक :- १ के लिए

प्रश्न क्र. १	पूछे गए तीन सन्दर्भ-सहित व्याख्या में से दो के उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
प्रश्न क्र. २	पूछे गए दो दीर्घोत्तरी प्रश्नों में से एक का उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
प्रश्न क्र. ३	पूछे गए दो दीर्घोत्तरी प्रश्नों में से एक का उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
प्रश्न क्र. ४	पूछे गए पाँच टिप्पणियों में से तीन के उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
		६० अंक

सेमेस्टर III के प्रश्नपत्र क्रमांक :- ४ के लिए

प्रश्न क्र.१	अ) पूछे गए दो सन्दर्भ-सहित व्याख्या में से एक का उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
	आ) पूछे गए दो सन्दर्भ-सहित व्याख्या में से एक का उत्तर अपेक्षित	
प्रश्न क्र. २	पूछे गए दो दीर्घोत्तरी प्रश्नों में से एक का उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
प्रश्न क्र. ३	पूछे गए दो दीर्घोत्तरी प्रश्नों में से एक का उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
प्रश्न क्र. ४	क) पूछे गए दो टिप्पणियों में से एक का उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
	ख) पूछे गए दो टिप्पणियों में से एक का उत्तर अपेक्षित	---
		६० अंक

सेमेस्टर IV के प्रश्नपत्र क्रमांक :- २ के लिए

प्रश्न क्र. १	पूछे गए दो दीर्घोत्तरी प्रश्नों में से एक का उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
प्रश्न क्र. २	पूछे गए दो दीर्घोत्तरी प्रश्नों में से एक का उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
प्रश्न क्र. ३	पूछे गए दो दीर्घोत्तरी प्रश्नों में से एक का उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
प्रश्न क्र. ४	पूछे गए चार टिप्पणियों में दो के उत्तर अपेक्षित	१५ अंक
		६० अंक